स्पिनोजा की तत्वमीमांसा का अपरिहार्य परिणाम निर्धारणवाद है। स्पिनोजा न तो ईश्वर में और न ही मानव में इच्छा स्वतंत्रता स्वीकार करते हैं। उनके अनुसार सारी घटनाएँ नियति - नियमों से संचालित हैं। ऐसी स्थिति में उसी क्रिया को स्वतंत्र कहा जा सकता है जो किसी वस्तु के अपने स्वरूप से ही संचालित होती है। यदि मानव व्यवहार भी आत्म - स्फुरित भावना से ही संचालित हो तो स्वतंत्र व्यवहार है। आत्म - स्फुरित भावना वह है जो मानवीय आत्मसत्ता के तत्व से निर्देशित और निर्धारित हो और उसी भावना को आत्मसत्ता के तत्व से निर्धारित होना समझा जाएगा जो स्पष्ट तथा परिस्पष्ट हो। स्पष्ट और परिस्पष्ट भावना बुद्धि से ही प्राप्त हो सकती है। इसलिए बौद्धिक जीवन ही स्वतंत्र जीवन है। बौद्धिक जीवन का परिपाक परिपाक ईश्वर के प्रति 'बौद्धिक प्रेम' में होता है।

स्पिनोजा के दर्शन में ईश्वर प्रेम का एक विशेष अर्थ है। स्पिनोजा का ईश्वर प्रेम संवेगात्मक नहीं बल्कि ज्ञानात्मक है। इसलिए उसे उन्होंने 'बौद्धिक प्रेम' कहा है। फिर, स्पिनोजा ने कहा है कि साक्षात् अनुभूति से ही प्रेम हो सकता है। सच्चे आत्म - प्रेम

Scanned with CamScanner

और ईश्वर प्रेम में कोई भेद नहीं है, क्योंकि ईश्वर ही हमारी सच्ची आत्मा है। ईश्वर प्रेम का मौलिक लक्षण है कि जो व्यक्ति ईश्वर से प्रेम करता है वह नहीं चाहता कि ईश्वर भी बदले में उससे प्रेम करें। उसके हृदय में लेन-देन की भावना नहीं होती। यह ऐसा प्रेम है जिसमें अपनापन या अहंभाव ही मिट जाता है। ईश्वर का 'बौद्धिक-प्रेम' द्वैतनाशक और ऐक्य संस्थापक है।

स्पिनोजा ने संकल्प के बजाय बुद्धि को महत्व दिया है। उनका कहना है कि नियतिवाद न तो दैवीय और न ही मानवीय नियमों की अवहेलना करता है। भाव-संवेग की ~~जकड़~~ जकड़न से मुक्ति इच्छा ~~स्वतंत्रता~~ स्वतंत्र्य से नहीं बल्कि ज्ञान से होती है।

स्पिनोजा के अनुसार हमारी बुद्धि में कुछ ऐसी शक्तियाँ हैं जिनसे हमारा नैतिक जीवन सरल हो जाता है और आध्यात्मिक जीवन का मार्ग प्रशस्त होता है। एक तो ज्यों ही हम किसी संवेगों को स्पष्ट रूप से समझ लेते हैं, त्यों ही वह भावलोपित हो जाता है। दूसरे जब हम नियतिवाद का स्मरण करते हैं तब भी मन की बैचेनी कम हो जाती है और मानसिक शांति मिलती है। अंततः ईश्वर से 'बौद्धिक-प्रेम' की अनुभूति होने पर भाव-संवेगों का क्षरण हो जाता है।

Scanned with CamScanner